Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मध्यप्रदेश में महिला उत्थान

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

मध्यप्रदेश में महिला उत्थान

Dr. Randhir Singh

Asst. Professor (Seth Tek Chand College of Education) Rattan Dera (Kurukshetra)

----------♦----------

2.1 महिलाओं की सामाजिक स्थिति –

उन्नीसवी शताब्दी के आरंभ के साथ ही भारत में धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक जागरण का श्री गणेश हो गया। इस समय ऐसे वातावरण का निर्माण हो रहा था, जिसमें नया दृष्टिकोण, नई अभिलाषाएं और जागृति की नवीन योजनाएं बनने लगी थीं। यह शिक्षित भारतीयों का एक रचनात्मक बौद्धिक प्रयास था। इस काल में पाश्चात्य सभ्यता के सम्पर्क से एक नवीन भावना एवं चेतना उत्पन्न हुई, जिसने भारतीय जीवन प्रणाली, साहित्य, शिक्षा एवं कला को प्रभावित किया। यह काल अन्य दृष्टियों से भी महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। एक शताब्दी के अन्दर भारत मध्य युग से निकल कर आधुनिक युग में आ गया।

1818 ई. में तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध में नागपुर के भोसलें पराजित हुए और नागपुर के साथ–साथ मध्यप्रदेश में भी ब्रिटिश शासकों का नियंत्रण स्थापित हो गया। इसके पूर्व मराठों ने यहां 77 वर्षों तक शासन किया था। इस प्रकार मराठा एवं ब्रिटिश शासन का प्रभाव यहां की सामाजिक स्थिति पर ही नहीं वरन् यहां के प्रशासनिक एवं आर्थिक जीवन पर भी पड़ा। मध्यप्रदेश में ब्रिटिश नियंत्रण से प्रशासन के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ, जिसने यहां के इतिहास को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

मध्यप्रदेश की सामाजिक दशा भारतीय समाज से बहुत अलग न होते हुए भी इसकी अपनी एक अलग पहचान थी। मध्यप्रदेश के समाज में भी भारतीय समाज की तरह अंधविश्वास, रूढ़िवादिता अस्पृश्यता इत्यादि कुरीतियां व्याप्त थीं परंतु इसका प्रभाव यहां पर कम था। जाति –भेद और वर्ण व्यवस्था होते हुए भी यहां पर सामाजिक भेद नहीं के बराबर था। मध्यप्रदेश के समाज पर कबीरपंथ का व्यापक प्रभाव था। यद्यपि समय के साथ–साथ कबीर पंथ में अंधविश्वास व कुरीतियां व्याप्त हो गई, परतु इसकी उदारता सहभाव तथा सामाजिक समरसता ने मध्यप्रदेश के समाज को प्रभावित किया। मध्यप्रदेश में कबीर पंथ की स्थापना मराठा काल में हुई परन्तु उसका व्यापक रूप से विकास तथा प्रसार 19वीं शताब्दी में हुआ।

मध्यप्रदेश के समाज पर कबीर पंथ के साथ–साथ सतनाम पंथ का अत्यधिक प्रभाव पड़ा, क्योंकि सतनाम पंथ के प्रवर्तक गुरू घासीदास का कार्यक्षेत्र मध्यप्रदेश था। उन्होंने समाज के पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। मध्यप्रदेश में सामाजिक सुधार के क्षेत्र में गुरू घासीदास के उपदेशों तथा शिक्षाओं का अधिक प्रभाव पड़ा है।

निःसंदेह मराठा शासनकाल से लेकर ब्रिटिश शासनान्तर्गत उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक मध्यप्रदेश की सामाजिक व्यवस्था में अनेक परिवर्तन आये। मराठों के प्रभाव से जहां एक ओर सामाजिक समानता तथा बौद्धिक जागरण परिलक्षित हुआ, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश शासनकाल में हुए प्रशासनिक एवं शिक्षा संबंधी सुधारों से एक बौद्धिक मध्यमवर्ग का विकास हुआ। कबीरपंथ और सतनाम पंथ ये दो ऐसे धार्मिक विचार थे, जिन्होंने मध्यप्रदेश के सामाजिक जीवन को गहराई तक प्रभावित किया। कबीरपंथ ने समाज को पुरोहितवाद से मुक्त करने का प्रयास किया तो सतनाम पंथ ने पिछड़े वर्गों को सामाजिक समानता प्रदान की। इस प्रकार मध्यप्रदेश का सामाजिक जीवन उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय सामाजिक जीवन की तुलना में बेहतर स्थिति में था।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय सामाजिक जीवन में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। महिला का न तो अपना व्यक्तित्व रह गया था और न सामाजिक अधिकार ही। गुलामी के जीवन के साथ उसका विचार भी गुलाम बन गया तथा कुरीतियों से लड़ने की शक्ति क्षीण हो गई। इसी समय भारत में पुनर्जागरण की लहर आई और अनेक धर्म व समाज आन्दोलनों के द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार के अनेक कार्य किए गए और उनसे प्रेरित होकर ब्रिटिश शासकों के द्वारा भी इस काल में प्रचलित अमानवीय प्रथाओं को समाप्त करने के लिए कानून बनाए गए। इससे महिलाओं की स्थिति में सुध ार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

मध्यप्रदेश के सामाजिक जीवन में महिलाओं की स्थिति भी काफी दयनीय थी। वे प्रायः 8 से 12 गज लंबी साड़ी अथवा लुगड़ा पहनती थी। पोलका का प्रचलन प्रारंभ में बिल्कुल नहीं था परंतु धीरे–धीरे इसका प्रयोग होने लगा। बैरागी एवं उच्च जाति की महिलाओं में सिर पर कपड़ा रखने का रिवाज था। इस तरह इनकी वस्त्र संबंधी आवश्यकताएं न्यून थी।

मूंगा, माला,मेंहदी और चांदी के गहने यहां की महिलाओं को विशेष प्रिय थे। उनका शरीर मजबूत और सुडोल होता था। पुरूषों की तुलना में उनमें साहस, बल, चातुर्य, गृह कार्य की दक्षता और हस्त कौशल की कमी नहीं थी। इन गुणों में वे पुरूषों की बराबरी करती थी और उनके कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती थी।

निम्न वर्गों में विधवा–विवाह प्रचलित था। इसके अतिरिक्त चूड़ी पहनाने की प्रथा थी। किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाने पर अथवा फिर किसी के द्वारा अपने पति को छोड़कर अन्य पुरूष के द्वारा चूड़ी पहन लेती थी। मध्यप्रदेश की महिलाओं में 'गोदना' गुदाने की परंपरा थी। गोदना को शरीर का आभूषण न मानकर उसे धार्मिक महत्व दिया जाता था। ऐसा विश्वास था कि मरने के बाद आत्मा के साथ गोदना ही परलोक में जाता

है। कहा जाता है कि यह प्रथा मुगलों के शासन काल में प्रारंभ हुई।

मध्यप्रदेश में अंधविश्वास का बहुत ज्यादा प्रभाव दिखाई पड़ता है। आदिवासी बाहुल क्षेत्र होने के कारण झाड़–फूंक, जादू–टोना आदि में महिलाओं का अधिक विश्वास था। मरण–मारण, उच्चाटन तथा वशीकरण जैसी विधाओं में गांव की कुछ महिलाएं निपुण होती थी, जिन्हें 'टोनही' कहा जाता था तथा ऐसी महिलाओं को ग्राम बहिष्कार शारीरिक यातना या कभी–कभी मृत्युदण्ड की सजा भी दी जाती थी। वर्तमान में भी समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है कि अमुक महिला को टोनही कह कर परिवार समाज और गांव से निकाल दिया गया था या निर्वस्त्र कर घुमाया गया।

महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कबीर पंथ एवं सतनाम पंथ के द्वारा अनेक कार्य किए गए। सतनाम पंथ के संस्थापक गुरू घासीदास को मध्यप्रदेश में महिलाओं का प्रथम उद्धारक माना जाता है। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता तथा सामाजिक अधिकारों को दिलाने के लिए कार्य किया। विधवा महिलाओं का पुनर्विवाह, उनके धार्मिक कार्यों में पुरूषों के समान भाग लेने का अधिकार तथा एक पत्नी प्रथा जैसे सुधारों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। गुरू घासीदास के यह कार्य सिर्फ सतनामी समाज की महिलाओं के लिए ही नहीं अपितु समस्त महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बने।

ब्रिटिश शासन के पूर्व मध्यप्रदेश में महिलाओं में महिलाओं की शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। महिलाओं को शिक्षा देना सामाजिक परंपरा के विरूद्ध माना जाता था। ब्रिटिश शासनकाल में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किये गये। शासन की ओर से मध्यप्रदेश में अनेक कन्या पाठशालाओं की स्थापना के साथ साथ ईसाई मिशनरियों के द्वारा भी महिला शिक्षा के लिए अनेक कार्य किए गए। इस प्रकार पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से छतीसगढ़ की महिलाओं में जागृति आई और इस क्षेत्र की महिलायें राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए आगे आई। प्रारंभ में उच्च वर्ग की महिलाओं ने पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित होकर अपने रहन–सहन तथा वेशभूषा में परिवर्तन लाया। उनके विचारों में भी काफी परिवर्तन हुआ और वे महिलाओं के सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगी। फिर भी समाज का एक बहुत बड़ा महिला वर्ग शिक्षा से वंचित रहा तथा उनमें व्याप्त कुरीतियां, अंधविश्वास तथा दासता की भावना यथावत रही।

धर्म और समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों तथा अंधविश्वासों को दूर करने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज में जो नई चेतना उत्पन्न हुई उसे 'पुनर्जागण' की संज्ञा दी गई। पुनर्जागरण का प्रभाव भारत के किसी एक क्षेत्र विशेष तक सीमित न रहा, अपितु संपूर्ण देश पर पड़ा। मध्यप्रदेश में भी पुनर्जागरण काल के पूर्व प्रायः वही परिस्थितियां थी जो सम्पूर्ण देश में उस समय विद्यमान थी। मध्यप्रदेश से लगे हुए क्षेत्र विदर्भ, आंध्र, उड़ीसा, बंगाल, उत्तरप्रदेश, नर्मदा क्षेत्र आदि में सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से व्यापक परिवर्तन प्रारंभ हुए। जिनके परिणामस्वरूप म्ध्यप्रदेष में भी सामाजिक सांस्कृतिक चेतना का विकास हुआ।

वस्तुतः मध्यप्रदेशएक ऐसा क्षेत्र है, जहां भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोग निवास करते हैं, अतः देश के विभिन्न भागों में हो रहे समाज सुधारों का यहां प्रभाव पड़ा।

कहा जा सकता है कि भारत के अन्य क्षेत्रों की तुलना में मध्यप्रदेश में महिलाओं की स्थिति बेहतर होने के बावजूद यहां महिलाएं अशिक्षा, अंधविश्वास तथा धार्मिक –सामाजिक मान्यताओं से जकड़ी हुई थीं। निश्चित ही कबीरपंथ तथा सतनाम पंथ के संस्थापक गुरूघासीदास के प्रयासों से निम्न वर्ग की महिलाओं की स्थिति में थोड़ा बहुत परिवर्तन आया, परंतु इससे समस्त महिला वर्ग लगभग अछूता रहा। ब्रिटिश शासन तथा ईसाई मिशनरियों के प्रयास से महिलाओं की शिक्षा की कुछ व्यवस्था अवश्य की गई, परंतु वे समस्त महिला समाज को प्रभावित न कर सकी। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में बंगाल, उत्तर भारत तथा महाराष्ट्र में जो समाज सुधार आंदोलन चल रहे थे, उनका प्रभाव मध्यप्रदेश पर पड़ा रहा था, जिसके फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार का वातावरण निर्मित होने लगा।

2.2 विभिन्न संगठनों का योगदान –

यद्यपि मध्यप्रदेश एक ऐसा प्रदेश है जहाँ महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत दूसरे प्रदेशों से अच्छी रही है, परन्तु यहाँ पर भी नारी को समाज में पुरूषों के बराबर सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त नही थी। आधुनिक काल में स्त्रियों की स्थिति में सुधार लाने के लिए समय–समय में विभिन्न समाज–सुधारकों के द्वारा प्रयास किए गए। सर्वप्रथम सतनाम पंथ के प्रर्वतक गुरू घासीदास के द्वारा समाज सुधार के साथ–साथ महिला उत्थान की दिशा में कार्य किया उन्होंने समाज में स्त्रियों के समान अधिकारों की वकालत की। उनका आविर्भाव उस समय हुआ जब मध्यप्रदेश में मराठों का राज्य था। देश के कतिपय भगों में अंग्रेजी राज्य की पृष्ठभूमि बन रही थी। अराजकता, अनेकता, व कुशासन से लोग त्रस्त थे गुरू घासीदास का जन्म ऐसे समय में हुआ था, जग उॅच–नीचा, जातिवाद भेदवाद तथा छूआछूत की भावनाएँ अपनी चरम सीमा पर थी। छूआछूत की भावनांए इतनी प्रबल थी कि स्वर्ग तो दूर की बात है, अछूत संभ्रात वर्ग की गलियों में जूते निकालकर चलते थे।

धनी–मानी कुलीन लोग एक ओर तो पुरूष वर्ग की छाया से दूर रहते थे, किन्तु वहीं दूसरी ओर महिलाओं से आत्म समर्पण चाहते थे। महिलाओं की अस्वीकृति की स्थिति में वे सतायी जाती थी।

गुरू घासीदास का जन्म 18 दिसम्बर 1756 ई. को गिरौदपुरी के हरिजन परिवार में हुआ। उन्होने 'सतनाम' प्रचार और समाज–सुधार आन्दोलन 1820 से 1830 के मध्य चलाया। उनके द्वारा प्रतिपादित 'सतनाम पंथ' का सतनामी समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा उन्होने मानव और समाज को पृथक पृथक करने वाली विकृत व्यवस्था एवं कुपरम्पराओं पर तीक्ष्ण प्रहार किया और सद्व्यवहार पूर्ण आर्दश प्रस्तुत किया। छुआछूत महिला उत्पीड़न तथा आर्थिक विषमताओं के विरोध में उन्होंने एक बहुत बड़े क्रान्ति दृष्टा तथा युग निर्माता का कार्य किया।

वे मध्यप्रदेश में महिला उत्थान के प्रथम प्रचारक थे। वे मातृशक्ति का सम्मान करते थे। उन्होने लागों को समझाया कि महिला केवल उपभोग करने की वस्तु नही है, अपितु समाज का एक महत्वपूर्ण घटक है तथा उसे आत्मसम्मान के साथ जीने का अधिकार मिलना चाहिये। उन्होने बाल–विवाह,बहु–विवाह एवं दासी प्रथा का विरोध किया। विधवा महिलाओं का पुनर्विवाह, धार्मिक कार्यो में पुरूषों के बराबर भाग लेने का अधिकार और एक महिला से विवाह आदि जितने भी मौलिक अधिकार थे उन सब के लिए सतत्–संघर्ष किया। वे मध्यप्रदेश अंचल में 18वीं शताब्दी के एक बहुत बड़े

www.ignited.in

समाज –सुधारक थे निः संदेह उनके द्वारा स्थापित सतनाम पंथ ने म्ध्यप्रदेष में निम्न वर्ग की महिलाओं को समाज में प्रतिष्ठित किया तथा जितनी सामाजिक कुरीतियाँ थी, उनका परिमार्जन किया।

सतनाम पंथ के समान कबीरपंथ ने भी मध्यप्रदेश में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। कबीर पंथ पर सूफी मत के एकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा का विरोध जातीय एकता और समानता, गुरू की गरिमा और सत्य, अहिंसा तथा प्रेम का स्पष्ट प्रभाव है। कबीर ने धार्मिक अनुष्ठान, धर्मिक क्रियाकलाप और आडम्बर का विरोध किया। उनका स्पष्ट कथन था कि सत्यवादी बनो, अपनी अन्तरात्मा में सत्य को ढूढों, क्योंकि वह सत्य बाहय धार्मिक परिवेशों और तीर्थों में कदापि नहीं मिलेगा। उनका महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण बहुत उदार था उन्होंने पतिव्रता महिला की भूरि –भूरि प्रशंसा की और कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को पतिव्रता नारी की तरह समाज की सेवा करनी चाहिए। कबीर पंथ की एक विशेषता यह है कि उसकी स्थापना यद्यपि कबीर के नाम पर हुई तथापि इसके प्रवर्तक संत धरमा दास जी थे। वे मध्यप्रदेश के बांधवगढ़ के निवासी थे और वैष्णव होने के साथ–साथ सालिक राम के परम भक्त थे कालान्तर में वे कबीर साहब की शिक्षा तथा उनके उपदेशों से प्रभावित होकर निर्गुण भक्ति की ओर प्रवृत्त हो गए। कालान्तर में कबीर साहब का आशीर्वाद प्राप्त करके उन्होने मध्यप्रदेश में कबीर पंथ के प्रचार का भार संभाला। उनके छोटे पुत्र मुक्तामणि ने बांधवगढ़ से प्रस्थान कर कुदुरमाल (बिलासपुर) पहुंचे। चुंकि यह काल कबीर पंथियों के संघर्ष का काल था, अतः एक कबीर परिषद् का निर्माण किया गया इसके तत्वाधान में चांपा में एक सभा आयोजित की गई, जिसके अनुसार मध्यप्रदेश शाखा दो भागों में विभाजित हो गई – 1. खरसिया 2. दामाखेड़ा। दामाखेड़ा में स्थित कबीर धाम का महत्व दो दृष्टियों से बहुत अधिक है। प्रथम दामाखेड़ा धर्मदास की गद्दी है और दूसरा इसे वंश गद्दी का महत्व प्राप्त है अर्थात यह गद्दी वंश–परंपरा के आधार पर ही प्राप्त होती है।

कबीर पंथ ने मध्यप्रदेश के निवासियों पर इतना प्रभाव डाला कि यहाँ ब्राम्हाण से लेकर पनिका तक कबीर पंथी हो गये। इस प्रकार कबीर पंथ ने मध्यप्रदेश में जातीय भेदभाव को शिथिल करने का प्रयास किया महिला उत्थान के क्षेत्र में कबीर पंथ ने महिलाओं को सामाजिक समानता प्रदान की तथा उनसे संबंधित अनेक कुरीतियों को दुर करने का प्रयास किया।

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 10 अप्रैल 1875 को मुम्बई में की। इसके पूर्व के समाज सुधारक आन्दोलन पाश्चात्य सभ्यता और ईसाई धर्म से प्रभावित थे। अतः हिन्दू धर्म एवं समाज की श्रेष्ठता साबित करने के लिए उग्र आन्दोलन की आवश्यकता थी, जिसकी पूर्ति आर्य समाज ने की।21 मध्यप्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना 27 दिसम्बर 1899 ई. को हुई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आर्य समाज में केन्द्रों के गठन के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य प्रारंम्भ किया गया और इसी का परिणाम है कि अब तक कुल 127 आर्य समाज केन्द्र इस आर्य प्रतिनिधि सभा के क्षेत्र में कार्यरत है।22 मध्यप्रदेश में आर्य समाज के प्रमुख केन्द्र बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर, भिलाई, अंबिकापुर, बैकुंठपुर, चिरमिरी, मनेन्द्रगढ़, भाटापारा, खरोरा दल्ली राजहरा, लवन, विश्रामपुर, जगदलपुर, कोरबा, पत्थलगांव, धमतरी तथा पिथौरा आदि है।

मध्यप्रदेश में आर्य समाज के आधारस्तंभ दुर्ग के घनश्याम सिंह गुप्त थे। आर्य समाज आन्दोलन को सफल बनाने में वे एक सेनानी की तरह आजीवन लगे रहे। वे अपने आरम्भिक जीवन से ही हरिजनों के प्रति सहानुभूति रखते थे, तथा 1928 के पहले ही उन्होने हरिजन परिवार के साथ भोजन कर इसका परिचय दिया था। वे साम्प्रदायिक सद्भाव के समर्थक थे। हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए उन्होने 1947 में शान्ति सेना का गठन किया था।

आर्य समाज के सिद्वान्तों के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था एवं विस्तार के लिए सम्पूर्ण म्ध्यप्रदेष क्षेत्र में अनेक विद्यालय एवं महाविद्यालय स्थापित किए गए जिनकी मध्यप्रदेश के शैक्षणिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। इस क्षेत्र में घनश्याम सिंह गुप्त कन्या महाविद्यालय दुर्ग सहित 33 विद्यालयों का संचालन हो रहा है। इस सभा द्वारा प्रादेशिक आर्य विद्या परिषद् का गठन किया है जिसके निर्देशन में सभी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा दी जाती है।

मध्यप्रदेश क्षेत्र में महिला शिक्षा के माध्यम से महिला उत्थान के लिए महत्वपूर्ण प्रयास घनश्याम सिंह गुप्त ने किया उन्होने दुर्ग में तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की, जिसमे लगभग एक हजार छात्राएँ शिक्ष प्राप्त कर रही है। गुप्त जी की प्रेरणा से दुर्ग में उनके नाम पर ही एक कन्या महाविद्यालय प्रारंभ हुआ। इसी प्रकार रायपुर में महन्त वैष्णवदास ने आर्य समाज की महिला शिक्षा की विचारधारा से प्रभावित होकर दूधाधारी स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय की स्थापना की। धमतरी के आर्य समाजी स्वामी अग्नि देव ने आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की। इस प्रकार आर्य समाज ने महिलाओं में शिक्षा का प्रचार कर उनमें राजनैतिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक जागरण पैदा किया।

मध्यप्रदेश में 18 वीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक महिला उत्थान की दिशा में अनेक महापुरूषों तथा संगठनों का योगदान रहा। गुरू घासीदास एवं उनका सतनाम पंथ धर्मदास का कबीरपंथ तथा आर्य समाज के घनश्यामसिंह गुप्त का इसमें विशेष उल्लेख किया जा सकता है। इन महापुरूषों ने मध्यप्रदेश में महिलाओं को समाजिक समानता प्रदान कर उन्हें अनेक समाजिक कुरीतियों से मुक्त कराया। महिलाओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था कर उन्हे जागृत करने में इनको भूमिका महत्वपूर्ण रही। कहा जा सकता है कि संगठनों के प्रयासों से ही छतीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

2.3 महिलाओं की शिक्षा –

जहाँ तक महिलाओं की शिक्षा का प्रश्न है,बिटिश शासनकाल के पूर्व इस दिशा में किये गये किसी प्रयास के कोई प्रमाण उपलब्ध नही है। संभव है प्राचीन काल में आश्रमों के माध्यम से अथवा मध्यकाल में मदरसों के माध्यम से शिक्षा दी जाती रही हो तथापि महिला शिक्षा के लिए काई प्रयास नही किया गया। 1861 ई. में मध्यप्रान्त का गठन हुआ तथा 1862 ई. में इस नये प्रान्त में शिक्षा विभाग की स्थापना की गई। इसके अंतर्गत नागपुर में लोक शिक्षण संचालनालय का गठन किया गया तथा म्ध्यप्रदेष क्षेत्र में शिक्षा संबंधी क्रियाकलापों के संचालन के लिए रायपुर में एक शाला निरीक्षक नियुक्त किया गया इस प्रकार म्ध्यप्रदेष में शिक्षा के विकास के लिए 1862 के पाश्चात् प्रयास प्रारम्भ हो गये।

मध्यप्रांत के गठन के पूर्व 1854 के चार्ल्स वुड के आदेश पत्र के द्वारा भारत में महिलाओं की शिक्षा के लिए विशेष प्रावधान किये गये थे। कन्या पाठशालाओं को शासन की ओर से ज्यादा अनुदान देने के साथ–साथ छात्राओं को छात्रवृत्ति देने की व्यवस्था की गई थी। तदनुसार मध्यप्रांत के शिक्षा विभाग ने अन्य प्रदेशों के साथ म्ध्यप्रदेष में कन्या पाठशालाओं की स्थापना की तथा निजी संस्थानों को कन्या पाठशालाएं स्थापित करने हेतु प्रेरित किया। उसके बावजूद क्षेत्र में महिला शिक्षा की दिशा में कोई उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त नहीं की जा सकी। 1906–07 में रायपुर जिले में केवल 7 कन्या पाठशालाएँ थी जिनमें से 5 का संचालन सरकार द्वारा किया जाता था इन कन्या पाठशालाओं में 460 छात्राएँ पढ़ती थी।26तथापि आने वाले वर्षों में और कन्या पाठशालाओं की स्थापना की जाने लगी तथा इन पाठशालाओं में अध्ययन छात्राओं की संख्या में वृद्वि होती रही। 1940–41 में रायपुर जिले में कन्या पाठशालाओं की संख्या 24 तथा उसमें अध्ययन करने वाली छात्राओं की संख्या 2,119 थी।27 रायपुर की तरह म्ध्यप्रदेष के अन्य जिलों तथा सामंती राज्यों में महिला शिक्षा का विकास हो रहा था। इस प्रकार म्ध्यप्रदेष में महिला शिक्षा का उतरोत्तर विकास परिलक्षित होता है।

महिला शिक्षा के क्षेत्र में म्ध्यप्रदेष में गैर–सरकारी संगठनों तथा व्यक्तियों के द्वारा किये गये प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राष्ट्रीयता के विकास के साथ कुछ राष्ट्रवादी नेताओं ने तथा संगठनों ने कन्या पाठशालाओं की स्थापना की पं. वामनराव लाखे के प्रयास से 8 जनवरी 1911 को रायपुर में जानकी देवी कन्या पाठशला की स्थापना हुई। इस पाठशाला को सरकारी अनुदान से सहायता नहीं मिलती थी, अतः लागों से दान लेकर इसकी व्यवस्था की जाती थी। 1917 की रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि वामनराव लाखे ने बड़ी राशि दान स्वरूप प्रदान की थी। यह शाला आज भी विद्यमान है तथा उसकी व्यवस्था रायपुर नगरनिगम के हाथों में चली गई है। इसी प्रकार दुर्ग में 1 जुलाई 1948 को एक कन्या पाठशाला प्रारम्भ की गई, जिसका नाम तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय है। इस पाठशाला की स्थापना तुलाराम जी परगनिहा से प्राप्त दान के द्वारा की गई तथा इसका संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा करती थी 1958 में इसे उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया। इस विद्यालय को प्रारम्भ करने का श्रेय आर्य समाज के नेता घनश्याम सिंह गुप्त को जाता है। उनकी प्रेरणा से तुलाराम जी ने अपनी समस्त सम्पति आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम वसीयत की थी। तुलाराम जी की इच्छा के अनुरूप ही इस विद्यालय का शुभारंभ कन्या गुरूकुल के रूप में हुआ। 1948 में जब यह विद्यालय खुला तब दर्ज छात्राओं की संख्या केवल 8 थी जो बढ़कर 1964–65 में 433 तथा1990–91 में 1080 हो गई इस विद्यालय की एक विशेषता यह है कि

इसके लिये निर्मित छात्रावास में लगभग 100 छात्राएँ निवास कर विद्या अर्जन करती है। मुस्लिम कन्याओं को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से रायपुर नगरनिगम ने 1929 में एक उर्दू कन्या स्कूल की स्थापना की इस स्कूल को प्रारम्भ करने का उद्देश्य मुस्लिम लड़कियों में उर्दु माध्यम से शिक्षा के प्रति रूझान लाना था। स्कूल में उर्दु माध्यम है तथा हिन्दी माध्यम एक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।1963 तक यह स्कूल नगर निगम द्वारा संचालित होता था तथा 1963 के बाद यह सरकार कि अधीन आ गया।

जिस समय देश में सरकारी स्कूलों का बहिष्कार किया जा रहा था तथा निजी स्कूल खोलने पर जोर दिया जा रहा था, उस समय बिलासपुर के हकीम अब्दुल सुभान ने 1926 में मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा के लिये उर्दु गर्ल्स स्कूल प्रारंभ किया प्रारंभिक वर्षो में यहाँ छात्राओं की संख्या बहुत अधिक नही थी, परन्तु धीरे –धीरे यह बढ़ती चली गई। प्रारंभिक में हकीम साहब ने स्कूल का सारा खर्च स्वयं उठाया था। अब यह स्कूल पुरी तरह से सरकारी अनुदान से चल रहा है। यह स्कूल 1926–1966 तक प्राथमिक स्तर का था, फिर माध्यमिक स्तर का और 1967–68 में हायर सेकेन्डरी स्तर तक हो गया। म्ध्यप्रदेष में स्थापित उर्दु स्कूलों में यह स्कूल सर्वोच्च स्थान पर है।

इस प्रकार छत्तसगढ़ के समाज सुधारकों जैसे वामन राव लाखे, घनश्यामसिंह गुप्त, तुलाराम जी परगनिहा, तथा हकीम अब्दुल सुभान आदि के प्रयासों से म्ध्यप्रदेष में महिला शिक्षा का विकास सम्भव हो सका। यद्यपि महिला शिक्षाके क्षेत्र में का विकास प्रारंभ में उत्साहजनक नहीं था तथापि आने वाले वर्षो में महिला शिक्षा क उतरोत्तर विकास होता गया। फलस्वरूप महिला जागरण एवं महिला उत्थान का मार्ग प्रशस्त होता गया।

म्ध्यप्रदेष में महिला महिला शिक्षा के लिए ईसाई मिशनरियों द्वारा भी उल्लेखनीय कार्य किया गया है। मिशनरियों के कार्यो में शिक्षा का विकास महत्वपूर्ण कार्य था। म्ध्यप्रदेष में अनेक स्थानों पर मिशनरियों ने कन्या पाठशालाएं प्रारंभ कर महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। रायपुर स्थित प्रोटेस्टेंट मिशन द्वारा 1860 में सेंट पाल स्कूल की स्थापना की। प्रारंभ में यह स्कूल केवल लड़को के लिए था, परन्तु बाद में लडकियों के लिए भी एक स्कूल प्रारंभ किया गया। इसी प्रकार 1903 में श्रीमती गाँस एवं श्रीमती सोल ने रायपुर में सालेम कन्या स्कूल की स्थापना की। रायपुर स्थित सेंट पाल गर्ल्स हायर सेकेन्डरी स्कूल तथा सालेम गर्ल्स हायर सेकंडरी स्कूल आज भी महिला शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र माने जाते है। परसाअदेर में ऐसी लड़कियों के लिए जो नियमित रूप से स्कूल नही आ पाती थी

एक ट्रेनिंग स्कूल स्थापित किया गया जिसकी स्थापना मिस हेजल पेन्टर ने की एवं जिसका नेतृत्व बाद में मिस वोबस ने ग्रहण किया।32 पेंन्ड्रारोड में लड़कियों की प्राथमिक शाला का प्रारम्भ मिस जोनेटार्वेन्स द्वारा किया गया जो बाद में सुमन निकेतन गर्ल्स हाई–स्कूल के रूप में विकसित हुआ।33 जांजगीर में 1908 में मिस ए.फन्क ने कन्या शाला की स्थापना की। तथा दूर से आने वाली छात्राओं को ध्यान में रखकर एक छात्रावास की स्थापना की। कुछ साल तक शाला का विकास होता रहा किंतु इसके बाद शाला में आने वाली छात्राओं की संख्या कम होने लगी एवं एक समय स्थिति ऐसी आ गई कि छात्राओं की संख्या नगण्य हो गई। अतः सन् 1920 के लगभग इस शाला को बन्द करने का निर्णय लेना पड़ा।

जगदीशपुर में सन् 1927 में रेव्ह एस.टी. मोयर एवं श्रीमती मांयर ने बालकों के लिए प्राथमिक शाला के लिये प्राथमिक शाला स्थापित की गई। यह शाला कई वर्षो तक उसी रूप में संचालित होती रही। जगदीशपुर में 1939 में मीडिल स्कूल स्थापित किया गया।1946 में उसे हायर सेकेन्ड्री स्कूल में परिवर्तित कर दिया गया। अमेरिका के एक दानदाता के नाम पर इस स्कूल का नाम रखा गया 'जैनसन मेमोरियल हाई स्कूल' यह रायपुर से रायगढ़ के बीच में स्थापित होने वाला पहला हायर सेकेन्ड्री स्कूल था। इस विद्यालय में सह शिक्षा दी जाती है।

मिस किंग्सबरी ने बिलासपुर के चांटापारा नामक मुहल्ले में लड़कियों के लिये एक प्राथमिक शाला की स्थापना की एवं बाद में लड़कियों के लिये एक अनाथालय भी प्रारम्भ किया। इसी प्रकार मुगेली, धमतरी, कोरबा, एवं तिल्दा आदि स्थानों में

भी ईसाई मिशनरियों ने मिशन स्कूलों की स्थापना की , जिसमें पढ़ने के लिये बहुत से लड़के एवं लड़कियां आती है। इस प्रकार ईसाई मिशनरियों ने म्ध्यप्रदेष में स्त्री– शिक्षा का उल्लखनीय कार्य किया। उनके द्वारा स्थापित स्कूलों तथा अनाथालयों में शिक्षा प्राप्त कर म्ध्यप्रदेष की महिलाओं में जो बौद्धिक जागृति आई इसका प्रभाव स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान उनकी भागीदारी के रूप में देखा गया।

उपरोक्त प्रकार से महिलाओं को शिक्षित करने का कार्य ब्रिटिश शासन, समाज– सुधारकों एवं ईसाई मिशनरियों के द्वारा किया गया। शिक्षा से महिलाओं में जागृति आई तथा वे समाज में परम्परागत रूप से चले आ रहे रूढ़िवादी बंधनों से मुक्त होने का प्रयास करने लगी। शासन ने भी समाजिक कुरीतियों जैसे बाल–विवाह, सती–प्रथा, आदि को समाप्त करने का प्रयास किया। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में शिक्षित एवं जागरूक महिलाओं ने महात्मा गांधी के आहवान पर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया। इसके अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर अपने परिवार के लिए अर्थ–उपार्जन का कार्य भी करने लगी। शिक्षा से महिलाओं में आत्म–विश्वास बढ़ा तथा वे घर की चार दीवारी से बाहर आने लगी।

म्ध्यप्रदेष में महिला उत्थान के लिए किये गये विभिन्न प्रयासों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में महिला उत्थान की दिशा में सर्वप्रथम प्रयास सतनाम पंथ के संस्थापक गुरू घासीदास ने किया था। वे ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने समाज की निम्न वर्ग की महिलाओं में आत्म–सम्मान एवं आत्म–विश्वास की भावना जागृत की। सतनाम पंथ के साथ कबीर पंथ एवं आर्य समाज का योगदान भी कम महत्वपूर्ण नहीं था इनके अतिरिक्त ब्रिटिश शासनकाल में शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं में पुरूषों के समान आगे बढ़ने की प्रेरणा उत्पन्न की। इस प्रकार महिला उत्थान का कार्य महात्मा गांधी के पूर्व ही म्ध्यप्रदेष में प्रारंम्भ हो चुका था।

सन्दर्भ

1. पी. एन.चोपड़ा, बी.एन.पुरी, एम. एम. दास – भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास पृ.82

2. भगवान सिंह वर्मा – मध्यप्रदेष का इतिहास,पृ.–79

3. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल – कबीर पंथ का उद्भव एवं विकास पृ.–18

4. शांता शुक्ला – मध्यप्रदेष का सामाजिक, आर्थिक इतिहास पृ.–28

5. प्रताप सिंह – आधुनिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास,– पृ.–4

6. दयाशंकर शुक्ल – छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन,पृ–23